रॉंम

श्री स्वामी जी

श्री जैमलदासजी महाराज

के

अनुभव पद

राम

सम्पादक

महन्त क्षमाराम शास्त्री

सींथल रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य

श्री रामधाम, सींथल, बीकानेर-(राज.)

अमूल्य

३०००

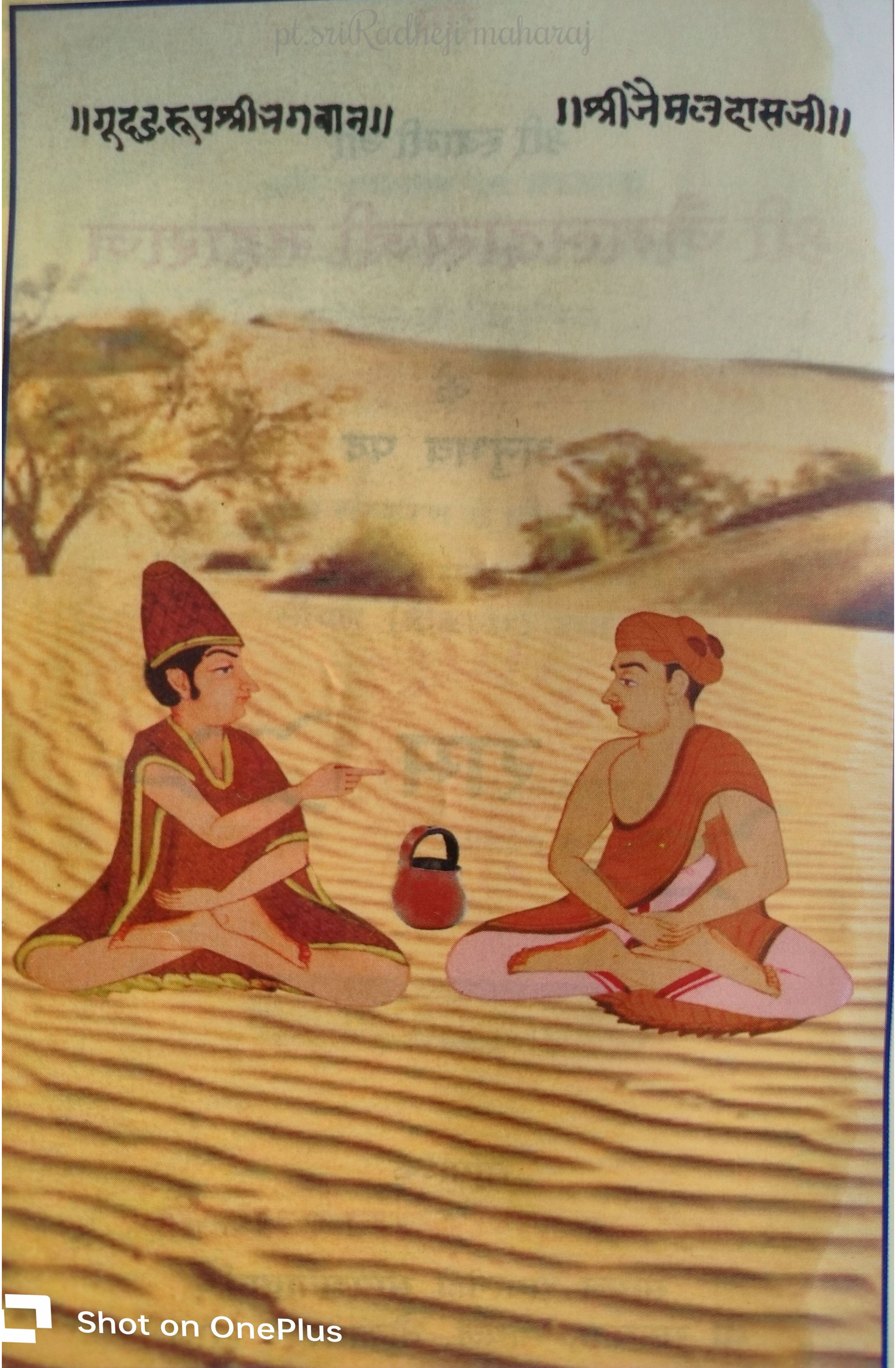

pt.sriRadheji maharaj

Shot on OnePlus

आदि सम्पादक एवं प्रकाशक
सींथल रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य
अनन्तश्री विभूषित
परमधामस्थ श्री भगवद्दासजी महाराज

इस संस्करण के प्रकाशक
श्रीमदाद्य रामस्नेही सम्प्रदाय सींथल ट्रस्ट
सींथल (बीकानेर) राज.

प्रथमावृत्ति : १००० संवत् २०२३
द्वितीयावृत्ति : ३००० संवत् २०७१

नित्य पठनार्थ

मुद्रक
लक्की प्रिण्टर्स, गोटन
नागौर (राज.)

राँम

श्री स्वामी जी

श्री जैमलदासजी महाराज

के

अनुभव पद

सम्पादक
महन्त क्षमाराम शास्त्री
सींथल रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य
श्री रामधाम, सींथल, बीकानेर - (राज.)

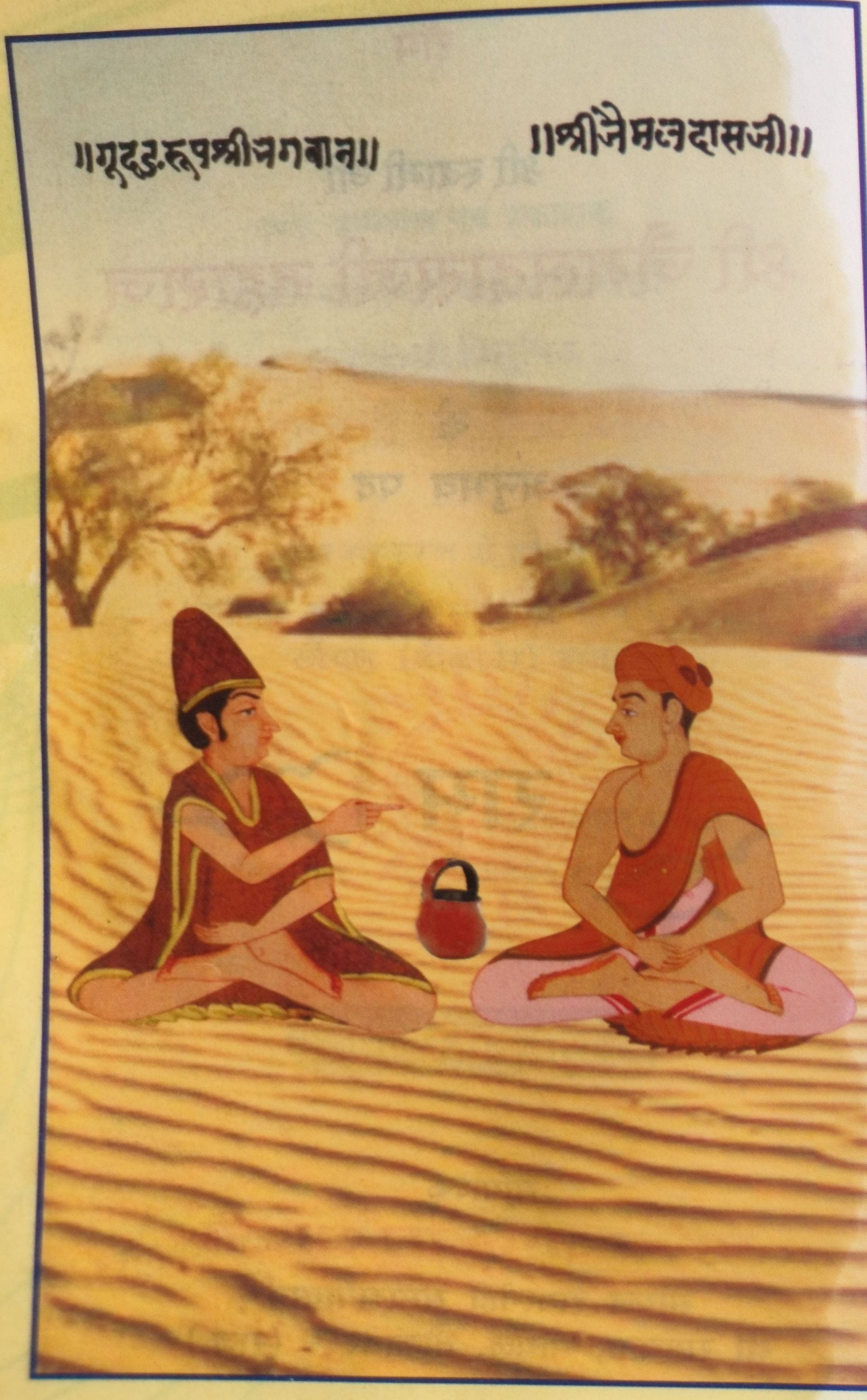

।। श्री हरिः ।।

''श्री चरणों में''

परमेश्वर गुरुदेव कूं वन्दन वार अनन्त।
जन जैमल मुरकाल के, सबही बन्दूं सन्त॥

अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद ''स्वामीजी श्री जैमलदासजी महाराज के पद'' को पूर्व में रामस्नेही सम्प्रदाय सींथल के नवम आचार्य अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद श्री भगवद्दासजी महाराज ने वि.सं. २०२३ में प्रथमवार सम्पादित एवं प्रकाशित करवाकर उच्च आदर्श की प्रेरणा दी। अनन्त श्री जैमलदासजी महाराज में साधना की दो विधाओं का दर्शन होता है। प्रथम साधना सगुण उपासना की रही, जिसमें भगवान् के श्री विग्रह को मन्दिर में प्रतिष्ठित कर पूर्ण विधि-विधान से पूजा जाता है। पूर्व में ''आप'' इसी उपासना में रत थे। तत्पश्चात् गूदड़ भगवान् की आज्ञा से आप निर्गुण निराकार सच्चिदानन्दधन सर्वव्यापक परब्रह्म परमात्मा के दिव्य अलौकिक एवं अमूर्त्त स्वरूप को राममंत्र की योगसाधना से अपने अन्तःकरण में ही अनुभव करने के लिए निर्गुणोपासना में प्रवृत्त हो गये। ये सब बातें बड़ी स्पष्टता से ''प्राक्कथन'' में समझा दी गई हैं। अनन्त श्री जैमलदासजी महाराज बड़े विरक्त महापुरुष थे। आपके ही 'पद' से प्रभावित होकर रामस्नेही सम्प्रदाय सींथल पीठ के आद्याचार्य अनन्त श्री हरिरामदासजी महाराज ने आपका शिष्यत्व स्वीकार किया एवं अपने योग सहित राम नाम के भजन की साधना को आगे बढ़ाया ।

रामस्नेही सम्प्रदाय के चार पीठ - स्थान माने जाते हैं - (१) रैण (२) सींथल (३) शाहपुरा (४) खेड़ापा। इनमें रेण पीठ के आदि आचार्य अनन्त श्री दरियावजी महाराज वि.सं. १७६६ में, सींथल पीठ के आदि आचार्य अनन्त श्री हरिरामदासजी महाराज वि.सं. १८०० में, शाहपुरा पीठ के आदि आचार्य अनन्त श्री रामचरणजी महाराज वि.सं. १८०८ में एवं खेड़ापा पीठ के आदि आचार्य अनन्त श्री रामदासजी महाराज १८०६ में दीक्षित हुए। यहां एक गहन विचारणीय विषय यह है कि पूर्व में सगुणोपासक ''वैष्णव वैरागी'' सम्प्रदाय में दीक्षित अनन्त श्री जैमलदासजी महाराज को १७६० में भगवान् ने गूदड़रूप से दर्शन देकर निर्गुण तारक (राम) मंत्र की दीक्षा दी। अतः रामस्नेही सम्प्रदाय का मूलतः बीजावपन वि.सं. १७६० में ही आपके हृत्स्थान में हुआ और वह

आगे चलकर ''सींथल-खेड़ापा रामस्नेहीसम्प्रदाय'' रूप विशाल वृक्ष पल्लवित, पुष्पित एवं फलित होकर भवताप संतापितों को परमशीतलता एवं परमाश्रय प्रदान करने लगा। लौकिक एवं साम्प्रदायिक सिद्धान्तों की दृष्टि से तो ''वैष्णव वैरागी'' सम्प्रदाय में दीक्षित होने के कारण अनन्त श्री जैमलदासजी महाराज की उसी सम्प्रदाय में परिगणना की जानी व्यावहारिक भी है परन्तु भगवत्प्रदत्त श्रीतारकमंत्र-श्री राममंत्र की दीक्षा से वे रामस्नेही सम्प्रदाय के मूलमंत्रप्रदाता है - इसमें किञ्चिन्मात्र भी सन्देह नहीं है।

रामस्नेही सम्प्रदाय सींथल पीठ के वर्तमान आचार्य श्री १००८ श्री क्षमारामजी महाराज ने अपने गुरु महाराज रामस्नेही सम्प्रदाय सींथल पीठ के नवमाचार्य अनन्त श्री विभूषित भगवद्दासजी महाराज श्री के चरणकमलों से सुवासितान्तःकरण होकर एक लंबे अन्तराल के बाद ''श्री जैमलदासजी महाराज के अनुभव पद'' को पुनः प्रकाशित करवाकर हमारे तमसाच्छन्नान्तःकरण को प्रेरणाभा से आलोकित किया, एतदर्थ हम कोटिशः कृतज्ञ हैं।

पूर्व पुस्तक में श्री जैमलदासजी महाराज के चित्र का अभाव प्रतीत हो रहा था। परन्तु मेरे गुरुभाई श्री रामरतन जी रामस्नेही ने बड़े प्रयास से इसे सुलभ करवा दिया। इधर श्री रामभरोस जी 'गोटन' वालों ने बड़े परिश्रम से इसे पुनर्मुद्रित का स्वरूप प्रदान किया - इन दोनों आत्मीयों को धन्यवाद देकर आत्मीयता से वंचित करने का मेरा साहस नहीं हो सकता ।

अन्त में :-

तुझ बिन और न कोई दूजा, नैणां नूर समाई वे ।
जैमलदास उदास भया अब, तेरा दर्शन तांई वे ।।

की साधना के साथ -

सतामनुचरः
रामपाल रामस्नेही
संयुक्त मंत्री
श्रीमदाद्य रामस्नेही सम्प्रदाय सींथल ट्रस्ट
सींथल, बीकानेर (राज.)

श्री रामधाम, सींथल
तिथि तेरस आषाढ़ वदी
संवत् २०७१

।। रां रामाय नमः।।

प्राक्कथन

हरिया जैमलदागुरु, राम निरंजन देव ।
काया देवल देहरो, सहज हमारे सेव ।।

यह निर्विवाद सिद्ध है कि अति प्राचीन काल से ही भारत, समस्त विद्याओं का केन्द्र एवं शिरोमणि देश रहा है। इस पावन भूमि पर अनेकानेक तपोनिष्ठ ऋषि-मुनियों ने सनातन धर्म एवं सद्विद्या के प्रचार के लिए अवतार लेकर तंत्र, पुराण, स्मृति- ग्रन्थादिकों का प्रतिपादन किया है तथा साथ ही लोकोपकार, त्याग, वैराग्य, वीरता एवं मानवता आदि उदात्त भावनाओं का प्रत्यक्ष प्रमाण दिया है। इन विशिष्ट गुणों के कारण यह देश आध्यात्मिक ज्ञानादि का प्रमुख स्थल माना जाता रहा है।

समय ने पासा पलटा और कलियुग की काली छाया से संत-समाज का क्रमशः ह्रास होकर नास्तिकवाद सर्वत्र पनपने लगा। इसी बीच नास्तिकवाद के खंडन तथा आस्तिकता के मण्डन के लिए श्री शंकर स्वामी ने अवतार लेकर सद्धर्म की प्रतिष्ठा स्थापित की। परन्तु कुछ समय के बाद ही फिर अनेक मतमतान्तरों के चक्कर में पड़कर जनता नास्तिकवाद की ओर झुकने लगी। उस समय में शठकोपादिक आचार्यो ने सद्धर्म रूपी लता की रक्षा करके ''श्री सम्प्रदाय'' नामक विशिष्ट उपासना पद्धति चलाई, जो विशेष रूपेण पनप न सकी। बाद में इसी सम्प्रदाय के आचार्य श्री रामानुजाचार्य ने अपने तपोबल से पुनः इसे हरा भरा कर ''श्री सम्प्रदाय'' की स्थायी प्रतिष्ठा की।

जिस प्रकार नास्तिक मत से संन्यस्त-सम्प्रदाय का उद्धार श्री शंकराचार्य ने किया उसी प्रकार श्री रामानुजाचार्य ने ''श्री सम्प्रदाय'' का विशेष रूप से प्रचार एवं प्रसार कर, धार्मिक वातावरण पैदा कर ख्याति प्राप्त की। आगे चल कर यही '' श्री सम्प्रदाय'' 'रामानुज सम्प्रदाय' नाम से विख्यात हुआ। बाद में इसकी एक शाखा ''रामावत सम्प्रदाय'' नाम से प्रचलित हुई, जिसका श्रेय गालवाश्रमी वैरागी सन्तो को है।

Shot on OnePlus

यदि हम इस सम्प्रदाय के उद्‌गम की ओर चलें तो पता चलेगा कि श्री रामानुजाचार्य की परम्परा में श्री राघवानन्दजी के शिष्य श्री रामानन्दजी हुए जिन्होनें 'रामावत सम्प्रदाय' चलाया जिसका प्रमुख केन्द्र जयपुर शहर के पूर्वीय भाग के सुरम्य शैल शिखरों के मध्य स्थित 'गलता' नामक पवित्र तीर्थस्थल है जहां के सुरम्य देवालय एवं स्फटिक के समान स्वच्छ जलों के झरने आगन्तुकों का मन हर लेते है।। भारत के विभिन्न भागों से यात्रीगण आज भी दर्शनार्थ आते रहते है। कालान्तर में श्री रामानन्दजी का प्रमुख तीर्थस्थल वाराणसी स्थित पंच-गंगाघाट माना जाने लगा जहां पर आज भी विधिपूर्वक उनकी 'चरण-पादुकाओं' का पूजन होता है। अतः इस मत के बहुत से अनुयायी बनारस भी जाते रहते है।

श्री रामानन्द जी की शिष्य परम्परा में श्री देवाशंकर जी ग्राम 'जायल' मारवाड़ (राज.) में अवतीर्ण हुए जिन्होने अपनी प्रवचन रूपी भगवद् भक्ति की भागीरथी को बहा कर इस प्रान्त में सदुपदेश का प्रचार किया। आपकी शिष्य परम्परा की यह विशेषता रही कि इनके शिष्य-प्रशिष्य अनेक स्थानों में धार्मिक प्रवचन करके ही जल-अन्नादि ग्रहण करते और फिर आगे बढ़ जाते। श्री देवाशंकर जी की शिष्य परम्परा में श्री मोहनदास जी महाराज नामक एक तपोनिष्ठ साधु हुए जो उज्जैन स्थिति अंगपात घाट पर अपने तपोबल से सुप्रसिद्ध हो गये। श्री मोहनदास जी महाराज के शिष्य 'मैदानी ''माधोदास जी'' नामक एक संत हुए जिनके बारे में कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है परन्तु निम्नलिखित ग्रन्थों - 'रामस्नेह धर्म प्रकाश, 'श्री रामदास जी महाराज की वाणी' और 'आचार्य चरितामृत' आदि से जो कुछ सामग्री मिल सकी है वह इस प्रकार से है -

ये जाति के चौहान भाटी, गाँव बातटेकर (बेरु), जैसलमेर के निवासी थे। जवानी में डाका डाल कर जीविकोपार्जन करना प्रमुख काम था - स्वभाव के क्रूर थे। परन्तु एक ही विशिष्ट घटना के कारण इनके जीवन को नया मोड़ मिल गया। आप इस समय तक 'माधोसिंह

धाड़ायती (डाकू)' के नाम से प्रसिद्ध थे। एक दिन की बात है कि आप सदल-बल एक यात्री-दल को लूटने की टोह में थे कि उसी रात को वह यात्री-दल उसी जंगल में ठहर कर भोजन बनाते समय चुपके से बातें करने लगा कि कहीं इस वीरान जंगल में उन्हें माधोसिंह डाकू लूट न ले। अप्रत्याशित भय से आक्रान्त होकर बोलने वाले उन यात्रियों की वाणी में दैन्यभाव स्पष्टतया सुनाई दे रहा था - जिसे अंधेरे में छिपा हुआ डाकू माधोसिंह सुन रहा था। अपने नाममात्र से डरने वाले उन यात्रियों की करुणापूर्ण वाणी से कठोरमन वाले डाकू माधोसिंह के ह्रदय का परिवर्तन हो गया और उसने आज्ञा दी कि जब आग बुझ जायेगी तब धाड़ा (डाका) मारेंगे। यह कहकर वह यात्रियों से पास आकर उन्हें वहाँ से चुपचाप चले जाने की सलाह दी और आप स्वयं मैदान में प्रज्वलित अग्नि के पास बैठकर उसे और भी प्रज्वलित करने के बाद वहाँ आसन लगा कर तप करने लगे। बाद में मैदानों में आग जलाकर तप करने के कारण आप ''मैदानी माधोदास'' के नाम से विख्यात हुए।

कुछ वर्षो के बाद एक आकाशवाणी के द्वारा आपको आदेश मिला कि उज्जैन के अंगपात-घाट पर 'जायल' नामक स्थान के महन्त श्री मोहनदास जी से दीक्षा ग्रहण करो। उस वाणी की आज्ञानुसार उसी समय वहाँ आकर दीक्षा ग्रहण कर लेने के उपरान्त कुछ समय वहीं रहे। तदुपरान्त बीकानेर शहर से पश्चिम दिशा में करीबन १६ मील की दूरी पर बसे कोडमदेसर नामक स्थान में आ बसे। यहाँ पर ''भैरव'' को अपना शिष्य बनाकर उसका नाम ''खेमदास'' रखा।

एक समय की बात है कि खेमदास ने गुरु की आज्ञा से अचानक आगत सन्त समाज को कहीं अन्य स्थान पर पके-पकाये हलवे के कड़ाव (बर्तन विशेष) को लाकर भोजन करवाया। इस कार्य से गुरु ने प्रसन्न होकर शिष्यत्व से मुक्त कर पूर्व पद दे दिया। परन्तु अपनी एवजी में एक वैश्य बालक लाकर श्री गुरु चरणों में समर्पित किया। यह शिष्य ''सुन्दरदास'' के नाम से विख्यात हुए। इन्हीं सुन्दरदास जी के शिष्य सन्त ''श्री चरणदास जी'' हुए जो इसी स्थान पर काफी वर्षो तक गुरु-सेवा में लीन रहे। इस प्रस्तुत पुस्तक के रचियता श्री जैमलदास जी (जयमल दास जी) इन्हीं चरणदास जी के शिष्य थे।

Shot on OnePlus

श्री जैमलदास जी का कोई प्रामाणिक परिचय उपलब्ध नहीं है किन्तु सन्त वाणियों के आधार पर जो कुछ सामग्री प्राप्त होती है उसी के आधार पर आपका परिचय दिया जा रहा है -

बीकानेर-देहली रेलवे लाइन पर स्थित 'सूडसर' नामक स्टेशन से ६ मील दूर बसे 'सांवतसर' ग्राम में आपका जन्म एक सुथार के घर हुआ। बचपन से ही आपकी प्रवृत्ति भगवदुन्मुखी थी। ऐसी किंवदन्ती है कि आप गौपालनार्थ जब समस्त गौओं को जंगल में ले जाते तो गौरक्षा का भार श्री गोपाल (भगवान्) के भरोसे छोड़ कर स्वयं नाम-जप करने लग जाते। आपके उपास्यदेव श्री गोपाल जी ही थे। आपका जन्म अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में माना जाता है। १७४० व १७४५ के बीच आपने कोडमदेसर स्थित 'रामावत' वैष्णव सम्प्रदाय के महन्त श्री चरणदास जी से दीक्षा ग्रहण की। बाद में आप जन्म-स्थान सांवतसर में बने अपने उपास्यदेव 'श्री गोपाल जी' के मन्दिर में श्री गोपाल जी की उपासना करने लगे। आपका भजन, साधन तथा सन्त सेवा का भाव उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा था। विक्रम सं. १७६० के चतुर्मास में आप श्रीमद् भगवद् गीता की कथा कर रहे थे। उस समय भगवान ने 'गूदड़ रूप' धारण कर वहाँ पधार कर जल याचना की। आपने उनकी सेवा में जल समर्पित किया। आगन्तुक ने उन्हें दूसरे ग्राम का मार्ग बतलाने को कहा। आप मार्ग बताने के लिए साथ हो लिए। मार्ग में बातचीत के मध्य गूदड़ स्वरूपधारी भगवान ने आपको विधिपूर्वक 'तारक-मंत्र' का उपदेश दिया। आप इसी मंत्र का जप करने लगे। कुछ समय पश्चात् आप सांवतसर से दुलचासर नामक ग्राम में आ गये। यहाँ अनेक सद्गृहस्थ बिश्नोई (जाति विशेष) आपके प्रतिश्रद्धालु हो गये। अब आपने इसी स्थान को अपना साधनास्थल मानकर निवास प्रारम्भ कर दिया। कुछ समय के बाद बीकानेर-जोधपुर रेलवे लाइन पर बसे नोखामण्डी से करीब दो मील दूर 'रोड़ा' नामक ग्राम में बिश्नोई जाट परिवारों के विशेष आग्रह पर वहाँ आकर बस गये। यहीं पर १८१० वि.सं. के लगभग अपना पार्थिव शरीर परित्याग कर भगवत्स्वरूप से एकाकार हो गये। इस ग्राम में आपका देवल व चबूतरा बना हुआ है। वर्तमान समय रोड़ा की गद्दी पर कोई महन्त नहीं है[1]। दुलचासर की गद्दी पर श्री १०८ श्री शंकरदास जी महाराज विराजमान हैं। आप मन्दिर की पूजा के साथ साथ श्री जैमलदास जी महाराज की प्रतीक छत्री की भी

पूजा करते[2] हैं। श्री जयमलदास जी महाराज की अनुभव वाणी कितनी रही होगी- इसका अभी कोई अन्तिम निर्णय नहीं हो सका है। रामस्नेही सम्प्रदाय के सिंहस्थल, खेड़ापा आचार्यो की संगृहीत अनेक हस्तलिखित प्रतियों में आपके केवल ४७ पद ही उपलब्ध हैं। इतस्ततः मौखिक रूप में कुछ फुटकर दोहे भी सुनने में आते हैं किन्तु उनका कोई प्रामाणिक आधार नहीं मिला। क्योंकि संत- सम्प्रदाय में इस नाम के चार-पाँच अन्य सन्त-भक्तों के नाम भी श्रुतिगोचर होते हैं। आपने अपने पदों में सभी विषयों पर प्रकाश डाला है। यथा आत्मानुभूति-पद १, २, ३, ४, ५ वें में, संसार की असारता का दिग्दर्शन पद - ८, ६, १०, वें में, उपदेशात्मकता - ३३, ३४, ४१ वें पदों में, भक्ति व शरणागति परक पद - ६, ११, १२, ३१, ३६, प्रभु राम की व्यापकता व सत्ता - ४५, ४६, ४७ वें पदों में, वात्सल्यता - ४३ वें पद में, इत्यादि भिन्न-भिन्न प्रकरणों का दर्शन जिज्ञासु विद्धज्जनों को आपके फुटकर पदों में प्राप्त होता है।

आप श्री के प्रधान शिष्य श्रीहरिराम दास जी महाराज वि.सं. १८०० आषाढ़ कृष्ण १३ को दीक्षित हुए। आप प्रतिदिन सिंहस्थल ग्राम से ७ कोस (१४ मील) दूरी पर स्थित दुलचासर ग्राम को गुरुदर्शनार्थ रात्रि में जाया करते व दूसरे दिन सुबह सिंहस्थल पुनः लौट आया करते थे। यह काम ६ माह तक निर्बाध गति से चलता रहा। ऐसी अलौकिक श्रद्धाभक्ति का अवलोकन कर गुरुदेव ने नित्य प्रति आने की मनाही कर दी। किन्तु फिर भी आप दर्शनार्थ १५ दिन से जाने लगे। यह नियम भी पर्याप्त समय तक चला। तब प्रसन्न होकर गुरुदेव ने सिंहस्थल रह कर ही साधन (राम-भजन) करने का आदेश दिया। तभी से रामस्नेही सम्प्रदाय का मूल उद्गम स्थान सिंहस्थल हुआ। अद्यावधि भी सिंहस्थल धाम के दर्शन कर सन्त भक्त जन आनन्द लाभ प्राप्त करते हैं। इसी हेतु रामस्नेही सम्प्रदाय के मूल मंत्र प्रदाता श्री जैमलदास जी ही हैं परन्तु जैमल शाखा का प्रस्तार श्री हरिराम दास जी महाराज से होता है। जैसा कि श्री दयालु दास जी

१. यह प्राक्कथन संवत् २०२३ में लिखा गया था। इस प्रक्कथन के बाद श्री जैमलदासजी महाराज का देवल एवं चबूतरा का पूर्णरूप से नव निर्माण रोड़ा ग्राम के प्रतिष्ठित सेठ श्री गोविन्दरामजी बिहाणी ने बड़े अथक प्रयास एवं भव्यता से करवाया एवं आज तक भी वे और उनका पूरा परिवार परमेष्ट-भाव से देवल एवं चबूतरे का सुप्रबन्ध करते हुए माघ सुदी ११ वि.सं. २०५८ को रोड़ा की गद्दी पर विराजित महन्त स्वामीजी श्री १०८ भवरदासजी महाराज को पूरा सहयोग कर रहे हैं।

२. दुलचासर की गद्दी पर विराजमान श्री १०८ श्री शंकरदासजी महाराज माघ अमावस्या वि.सं. २०२७ को परमधाम पधार गये।

Shot on OnePlus

महाराज ने अपनी परची व भक्तमाल में वर्णन किया है-

"भेष पंथ का संग तज दीया,
होय निरन्तर हरि पद लीया"
(गुरु प्रकरण परची)

"राम नाम परताप धिन, जैमल शाखा विस्तरी।"
(भक्तमाल)

अन्त में सभी से करबद्ध निवेदन है कि अज्ञ की अज्ञता से विज्ञ पुरुषों की अवज्ञा हो गई हो तो क्षमा प्रदान करावें।

श्री चौकसराम चिकित्सालय
बड़ा रामद्वारा
बीकानेर

शान्तिस्तुष्टि:पुष्टिश्चास्तु
महात्मनां शिशुः
महन्त भगवद्दास शास्त्री
सिंहस्थल रामस्नेहिसम्प्रदायाचार्य

।। रां रामाय नमः।।

पूज्य स्वामीजी श्री १०८ जैमलदास जी महाराज के अनुभव पद लिख्यते

। राग काफी ।

(१)

दीस रह्या दिल माँहि, दर्शन साँईदा।
साँईदा, साँईदा झिगमिग झांईदा।।टेर।।
शून्य[1] मंडल मैं सुनि रह्या वे, वाजै अनहद बैण[2]।
भया उजाला गैब[3] का बे, सहजाँ मिलीयाँ सैंण[4]।।१।।
निगम खोज पावै नहीं बे,जप तप लहै न कोय।
सो सांई तन में बसै बे, निमिष[5] न न्यारा होय।।२।।
सच्चा सांई यों खड़ा बे, संता ही सुख दैंण।
साँसा न्यारा कर दिया बे, देख्या नैणा नैण।।३।।
जैमल दास अवतार मिल्या बे,सन्मुख सिरजन हार।
भर्म जु भागा जीव का बे, दरस्या है दीदार।।४।।

(२)

लागि रह्या निज[6] नेह, दशमें द्वारि दा।
द्वारी दा द्वारी दा, औघट वारी[7] दा।।टेर।।
घट[8] में औघट[9] यूँ बसै बे, जैसे तिल में तेल।
नैड़ा जबही जानिया बे, शब्दां लागां सेल।।१।।
शशि में सूर समाइया बे, भागा है अंधकार।
दीपक हुवा निर्मला बे, विन बाती अंगार।।२।।
रतन प्रज्ञान प्रकासिया बे, मिटिया सांसा मोह।

१ सुषुमणाद्धार। २ स्वयंनाद-आपसे। ३ वीणा, वचन। ४ सज्जन। ५ पलक, समयांग। ६ अपना। ७ वलिहारीजाना। ८ शरीर। ६ परमात्मा।

किंचिन्[1] लौं[2] जिन जानिया बे, तिन सहज पिछान्या सोह।।३।।
अरस परस है मांहि समाना, मन मिलिया उलटा उर सै।
जैमल दास जुगे जुग तेरा, आतम राम सदा दरसै।।४।।

(३)

और लखै[3] नहीं कोई, मन की मन जानै।
जानेगा जानेगा, रवि शशि मैं आनैं।।टेर।।
अंतर में इक आरसी बे, देखन ही का चाव[4]।
अधर[5] खड़ी है पूतली बे, धरणि न मेल्है पाव।।१।।
अम्बर[6] वार उधाड़िया बे, खूल्हे सम्भु[7] दुवार।
झिलमिल झांई है रही बे, पल में है गया पार।।२।।
पढ़ना गुणना सो करै बे, जाके है मरजाद।
हम सेया है सो धणी बे, जाके अंत न आद।।३।।
निशि दिन नेड़ा नित खड़ा बे, पलकन छांड़े पास।
परम[8] पुरुस की चाकरी बे लागा जैमल दास।।४।।

(४)

कदे न उतरै खुमाँर[9] हरि[10] रग यो लागौ।
यों लागो यों लागो, यो तौ भ्रम यों भागों।।टेर।।
चित में चेतन ठाहरया बे, परम तेज परकास।
बेद पुराण गम नहीं बे, दर्शन पावै दास।।१।।
दूर धुजा धुनि में खड़ी बे, घुरै दमामा[11] घोर।
मुरली बाजै सोहणी बे, लागि रह्या है टोर।।२।।
मन ही में मन जाणीया बे, कहिबे को कुछ नांहि।
मूरख भूला भरम में बे, वाहिर ढूढन जांहि।।३।।
गगन मंडल बादल झरै बे, बूठा नाम निरास।

१ यत्किंचित्भी। २ तक। ३ जानना। ४ उमंग। ५ अनाश्रय। ६ ब्रह्मद्वार १ मा। ७ शिव मार्ग। ८ निर्गुण ब्रह्म। ६ छाक, नशा। १० प्रेम। ११ वाजा विशेष।

पावस[1] तूटा प्रेम का बे, भीना जैमलदास।।४।।

(५)

निरख्या है निज नैण निरंजन[2] न्यारा है।।टेर।।
रवि एको आकास में, सब लोके उद्योत।
तैसे घट घट एक हैं, परमातम की ज्योत।।१।।
नेड़ा है न्यारा बसै बे, भासै अगम[3] उजास।
अलष अखंडित है रह्या बे, यों ऊंचा आकास।।२।।
आदि अंत मध नित सदाबे, निर्गुण[4] गुण तें दूर।
कर्ता लिपता कुछ नहीं बे, परमातम हैं पूर।।३।।
साखी[5] भर्ता भोगता बे, निहचल ध्यान निवास।
सतगुर के परसाद[6] बे, पाया जैमल दास।।४।।

(६)

परबानी[7] मेरा पीउ, तुझदा[8] पार न पाई बे।।टेर।।
सचराचर सब रूप तुसाड़ा[9], घर घर दर्शन सांई बे।
अन्तर[10] खोजि निरन्तर देखै, जोवेगा[11] जिंद मांई बे।।१।।
तुझ विन और न कोई दूजा, नैणा नूर समाई बे।
जैमलदास उदास भया अब, तेरा दर्शन ताँई बे।।२।।

(७)

री तुझ आय मिलेगें, रसना राम पुकार।।टेक।।
तन मन लाय लाय चित चरणे, तोहि करेगें पार।।१।।
सुमिरन साझि उदास उलटि धुनि, है सारों निज सार।।२।।
सत करि मान असत करि काने[1], कर गहि दैगे तार।।३।।
जैमलदास हरि भक्ति विहूनी[2], बाजी[3] वनी असार।।४।।

१ वर्षा। २ निर्गुणराम। ३ बिना गम। ४ गुणरहित ब्रह्म। ५ साची भूत। ६ कृपा। ७ मन वाणी परक, राम। ८ तेरा। ६ तेरा। १० भीतर, भेद। ११ देखना।

Shot on OnePlus

(८)

रहता रूप पिछानि, या तो सब नट[1] बाजी।।टेर।।
देखत ही चल जायगी, या देही साजी।
रचने वाला सो रच्या, क्या करै काजी।।१।।
तन धन जोबन जांहिगे, संपति है ताजी।
काया माया छांडही, क्या भया राजी।।२।।
मात पिता सुत कुल त्रिया बे, संजोगे ह्वाजी।
छिन ही में छिटकाहिगें, क्या पचै पाजी[2]।।३।।
जैमलदास जगदीस कों, सुमरयां भव भाजी।
हरिजन हरि सों यों मिल्या, या दुनियाँ लाजी।।४।।

(९)

देख अंतर में रूप मनड़ो मगन भयो।।टेर।।
चिन्तामणि है चौहटे अगम पुरस की आथ[3]।
जा कारण जग यों फिरै, सो सांई है साथ।।१।।
उन्मुन में धुनि[4] लाय के, पवने अंबर धोय।
अन्तर नैन प्रकासिया, सहजे दर्शन होय।।२।।
निर्मल तेज निर्वाण का, सो दीसें निज मांहि।
कर्म भर्म की भींत है, ताको ही गम नांहि।।३।।
अविनाशी विनसै नहीं, ताको नांहि विनास।
सो आतम या देह में, देखै जैमलदास।।४।।

(१०)

ठग बाजी संसार दुनियाँ सब भूली, मोह्या है हद ऊली[5]।।टेर।।
लागि भरम चित मोहिया, चेतन विसरया जांहि।
निर्मल मूरति मांहिली, ताको देखै नांहि।।

१ नट का खेल। २ पागल। ३ माया। ४ ध्यान। ५ पासकी।

इन विध सांई मांहि है, ताहि न देखै कोय।
सार विचारयां शब्द का, नेड़ा ही निज होय।।
साहिब शब्द समाइया, जे कोई लेवै खोज।
प्रेम पियाला भरि पियै, लागै मन में मोज।।
जैमलदास भव नीर तिरन को, आतमराम आधार।
परगहि[1] हूवा पाखती[2], अनुभव हूवा पार।।३।।

(११)

श्वेत[3] कमल कै बीच, बिंदली[4] यों सोही।
यों सोही यों सोही, दुबिधा उन[5] मोही।।टेर।।
तिलके जितनी बिंदली पल में करि गई फेर।
सब जग मांहि समाइया, गहरा पडगया धेर ।।
चख[6] विन सूझै बिंदली, बिरला[7] करे विचार।
अगम निगग कें ऊपरै है निहचें निसतार।।
धरणि गगन की संधि में, है बिदली की छाँहि।
जैमलदास उलंघ करि, मिल्या निरंजन मांहि।।३।।

(१२)

दरस्या दिल ही में, सतगुर दे परसाद।
दरस्या दिलही में, सतगुर दे परसाद।।टेर।।
मन लागा सांसा भगा, निहचै निरंजन जोय।
अग्नि बिहूणा चांदणा, न्यारा निज तत होय।।
कमल फुरै मन सुध करें, सहज उजाला होय।
गगन मंडल झणकार में, लागा है चित मोय।।
मनकी मँदरा[8] पहरि के, अनहद करी आवाज।
सांचा सारग देखिया, भरम भया है भाज।।

१ परिवार, संग्रह। २ न्यारा। ३ हृदयकमल। ४ बिन्दु-रूपमाया। ५ उसने। ६ नैत्र। ७ कोई। ८ मुद्रा कुण्डल।

जैमल दास तत ज्ञानका, तन में किया विवेक।
जड़ता जीव निवारि के राख्या है निज एक[1] ।।४।।

(१३)

वटाउ रे लोक, तूँ तो मारग भूलो रे।।टेक।।
निर्मल नूर शरीर समाणा, मन ही मांहि महोलो रे।
सांचा राम सोइ संग तेरै, और झूठ सुख उलो रे[४]।।
पांच[५] पचीस मोह[६] मच्छर मद, या संगसूं तूं डूलो रे।
रहता रूप सही करि राखो, वहता देखन भूलो रे।।
जैमलदास भव भ्रम बंधन तजि, कोइक हरिजन[७] खूलो रे।।

(१४)

अवधि सिरानी[८] रे तेरी, हरि[९] सुमिरै क्यों नाहीं।।टेर।।
आव गई तु चेतै नांहीं, अवसर बीतौ जांहि ।।
नरपति भूपति ऐसे जानो, संपति[१०] सुपने मांहि ।।
हय दल हस्ती दास घणा संग ऊठि अकेलो जांहि ।।
झूठे सुखमें राचि रह्यो है, हरिसुख विसरै कांहि ।।
जैमलदास भव[११] नीर तिरन को रामनाम घट मांहि।।५।।

(१५)

अजहूँ चेते नांही, आयु[१२] घटंती जाय।।टेर।।
ज्यो तरु छाया तेरी काया, देखत ही घट जाय।।
ऐसो दाव[१३] बहुरि नहिं लागै, पीछे ही पछिताय।।
जैमलदास काच करि कानें, तत[१४] ही लेना ताय।।३।।

१ किनारे। २ बिना। ३ रचना। ४ अर्वाक्। ५ तत्व ५ प्रकृति २५। ६ अज्ञान। ७ विरक्त। ८ बीतगई। ९ सर्व पाप हरनेवाला । १० माया। ११ संसार। १२ आयुष्। १३ अवसर। १४ तत्व।

(१६)

व्यापक है घट मांहि, सो जन मेरा।।टेर।।
जनम मरण नहिं दुइ वाकै, आवागमन न फेरा।।
राग दोष भरम का भांडा, नाहिं मोह अंधेरा।।
तिरगुण ताप मिटावण हारा, मेटन भरम वसेरा।।
जैमलदास कहै सुन सांई, मैहूँ चाकर तेरा।।४।।

(१७)

जुग जुग बंदातेरा मैं जुग जुग बंदा[1] तेरा।।टेर।।
दुर्मति दुनियां दूर निहारै, है साहिब नित नेरा।।
निहचल रूप निहारा पेठा, चौथे घट मैं डेरा।।
राजिस सातिक तामिस तीनों, ये सब ऊला चेरा।।
इनके परै अगम गुरु खेलै, सो साँई है मेरा।
आतम राम सदा अविनासी, विनसै कर्मजु घेरा।।
अैसा ध्यान अंतर विच धारै, मेटै गर्भवसेरा[2]।
पिंड न प्रांण न सास उसासा, नांही मोह अंधेरा।
जैमलदास इसी पर रीधा, लागि रह्या नित नेरा।।८।।

(१८)

सोझि रे घट मांहि, तो सों सांई नेड़ा रे।।टेर।।
राम संभाल शब्द करि सोधो, भव सागर में वेड़ा[3] रे।
सूक्षम थूल सकल में व्यापक त्यों ही है घट तेड़ा रे।।
जैमलदास शरण सुख पाया, नित चरणों का चेड़ारे।।३।।

१ दास। २ निवास करना। ३ नाव।

(१६)

मुजरा[1] सतगुरदा ताहि किया ततसार।।टेर।।
सूच्छम[2] मेरा साँइया जड़ता है विस्तार।
दीपक दीया ज्ञान का, परदल[3] किया पार।।
तन सागर मन सीप है, सुषमण आसु[4] मेह।
सुन में मोती नीपना, वासों लागा नेह।।
परम[5] धाम जब सूझिया, मिट गई खांचो[6] तांण।
अगम[7] उजाला ब्रह्म का, सतगुरु दीया आण।।
तेज जग्या तत मिल गया, सुरति समाणी सास।
ब्रह्म झरै अमृत परै, पीवै जैमल दास।।४।।

(२०)

दशमें द्वार मंझार, मुरली[8] वाजै सोहनीं।
सोहनी रे सुन मांहि, मुनिवर मोहनी।।टेर।।
जंघन[9] पर कर धारि के वे, सम[10] आसन चित लाय।
निरत[11] धरै निज[12] नासिका वे, सुन में सुरति समाय।।१।।
सहसगुणै सरधा पनै बे, छिन ही विसरै नांहि।
सुरनर मुनिजन रीझिया बे, लागि मगन धुनि मांहि।।२।।
बांस विहूनी बांसुरी बे, बोले अमृत बैन।
नितही नेड़ी बाजही बे, अंतर लागा नैन।।३।।
जैमलदास धुनि ध्यान में बे, उगा निर्मल सूर।
मुरली मांहि अगोचरी[13] बे, ऊपर अनहदतूर।।४।।

१ नमस्कार। २ बारीक। ३ शत्रु दल। ४ आश्विन का मेह। ५ परंपद। ६ संशय। ७ ब्रह्म प्रकाश। ८ वंशी। ६ साथल। १० सरल। ११ दृष्टि। १२ अपनी। १३ मुद्राविशेष, इन्द्रियगोचर न हो।

(२१)

अधर[1] कमल के बार, रहँट्यो[2] हमारो अगमफिरै,
अगम फिरै है सिताब[3], रहँट्यो हमारो अगम फिरे।।टेर।।
पँचरंगी[4] ताड़ी रँहट्या के त्रिगुण[5] रंगारा होय।
लाल हरी स्याही मिली बे, जर्द[6] सपेती जोय।।
चारि[7] कला सो थंबला बे, सुखमण सारण[8] साल।
दिलदी दावन[9] यों बनी बे, मनदी घाली माल[10]।।
चंद सूरदा[11] ताकला बे, सुखमण काते तार।
षट सहस इक बीस का बे, दिल में करदें पार।।
जैमलदास यो रँहटियो बे, देख्यां परसन होय।
रुणझुण बाजें सोहणी बे, विरला बूझे कोय।।४।।

(२२)

रोम रोम रँग मांहि रमता राम रमाना।
अनहद तार बजाय अन्तर में, आपे आप लखाना।।टेर।।
साखी[12] साधु शब्द यों बोलै, वेद कतेव मथाना[13]।
संसा सोग भरम जिन छांड्या परगट पीउ पिछाना।।

१ हृदय कमल जो अधोमुख ८ पखुडीका है, अर्ध। २ चर्खा। ३ जल्दी। ४ पांच तत्व। ५ त्रयगुण। ६ पीलारंग। ७ सूर्य की कलाउरम कला पाताल बसाई, धूर्म कला लोकमही मांई। ज्योतिकला सुरलोक-निवासा, ज्वाला सब ब्रह्माण्ड प्रकासा। ८ चरखे की नीचेकी लम्बी लकड़ी। ६ करधनी। १० रस्सी, बेल्ट। ११ लोह की सलाका जिस पर डोर कतने पर लिपटाया जाता है। १२ गवाह। १३ जैन मतावलम्बी।

Shot on OnePlus

नाँ सो दूर नहीं सो नैड़ा, सहजै सहज समाना।
साझि सो सतकरि नाम निरंतर, अन्तर भेद लहाना।।
जो धिन साधु जुगति थां जानी, अजपा[1] जाप जपाना।
जैमलदास राम नाम सौं, पाहन नीर तिराना।।३।।

(२३)

गुरसम ऐसा है, राचि रह्या रंग मांहि गुरगम ऐसा है।।टेक।।
भुँई[2] खूंटा में गाडिके बे, घोड़ा[3] बन्ध्या मांहि।
ऊँट[4] अगम कुँ ऊपज्या वे, गुरबिन देखै नांहि।।
मूसा[5] मारि मंजारि[6] कुं बे, निकस गया है बैल[7]।
कीड़ी हस्ती खैंचि के बे लेगी दर[8] में सैल[9]।।
भोपी देवल परहस्या बे, छांडि दिया सब सांग।
खेचर भूचर मिल गया बे, कउवा करि गया कांग।।
जैमलदास इस ज्ञान में बे, उलटा भेद अंकूर।
लोकां सेवी राधिका बे, कुब्जा करदी दूर।।४।।

(२४)

मेरी जिंद कुरबान[10] साँइदी सूरत पर वारी हो।।टेर।।
सांइदी सूरत मेरे दिल विच बसदी, लागै मोहि पियारी हो।
दर्शन तेरो जीवन मेरो, मेटो भर्म अंधारी हो।।
आसन तेरो सहज सिंहासन, पांचू प्रेम पुजारी हो।
जैमलदास करै अरदासा[11], राखो सरण तुम्हारी हो।।

१ अन्तरजप। २ जानरूपीभूमिमें। ३ मनरूपी अश्व। ४ मिथ्याअहंकार। ५ विवेक। ६ अज्ञान। ७ वासना। ८ गुफा। ९ ब्रह्मरंध। १० समर्पण। ११ विनय।

(२५)

मैं देख्यो दिल मांहि झूठो मोह पसारोरे।।टेर।।
रंचक[1] सुख के कारणै हीरो सो जनम न हारो रे।।
बंधन वेड़ी है जम पेड़ी, लागू काल तुम्हारो रे।।
मैं तै तोड़ मोड़ दल पांचू, हुय मन तूं सियारो रे।।
जैमलदास भजन करि बेली[2] आखिर होत अबेरो रे[3]।।४।।

(२६)

।।राग गूजरी।।

मेरो प्रीतम यार[4] बसै तनमें।।टेर।।
दर्शन दीया गगन मग कीया, मगन भयो मन ही मन में।
जा कारण मैं बन बन ढूढ़्या, सोइ लह्या दिल ही दिल में।।
निशिवासर नैंणा में निरख्या, ध्याय रह्या धुनि ही धुन में।
ब्रह्मा पियाला है मतवाला, पी रु छक्या छिन ही छिन में।।
दर्पण में दीसै यों दर्शन, त्यों ही है घट ही घट में।
इला पिंगला सुषुमणि संगे, तिरवेणी के तट ही तट में।।
साँचा सांई (मेरा) सहज सरूपी, सूझि रहया सुन ही सुन में।
जैमलदास भया तब राजी, (पाया) रामरतन तन ही तन में।।४।।

(२७)

तिरवेणी के तट माँहि मुजरा नैणा दा।
नैंणाँदा नेणादा अनहद वेंणाँदा।।टेर।।
सुरत निरत भेला किया वे, उन्मुन तिलक सिन्दूर।
अनहद तूरा बाजिया बे, सुन में ऊगा सूर।।

१ थोड़ा। २ जल्दीमित्र। ३ देरी। ४ मित्र।

Shot on OnePlus

उरम धुरम गगने मिल्या बे, जोति उजाला मांहि।
सांई सन्मुख है खड़ा बे, दिल में दुबिध्या नांहि।।
सतगुर दा सर लागिया बे, दुबिधा निकसी दूर।
परदल मारया ज्ञान सों बे, है गया चूरा चूर।।
जैमलदास ऐसें कहें बे, मति कोई ढूंढो दूर।
आपा मेट रु देखिये बे, दिल में दर्शन पूर।।४।।

(२८)

राम रट्यो गलतान भयो जे।।टेर।।
सार को सार सकल ते ऊँचो, सो या तन में साधि लयो।।
आदि अनादि किता जन चीन्हो, ताको संसो दूरि भयो।
वेद पुराण सकल में बोलें, भक्ति मुक्ति विसराम लयो।।
जैमलदास लग्यो चित निहचें, दीपक ज्यों परकास भयो।।

(२९)

मन रहै लागो मन सों।।टेर।।
अन्तर मांहि अगम घर देखे, भेद लहै पर घर सों।।
चेतन में चित जाय समावै, विरच रहे विषया धन सों।।
त्रिकुटी ध्यान लगावै ताली, तोडि चलै तांतो तन सों।।
जैमलदास सांई के सरणे, ऐसो भेद लहै जन सौं।।४।।

(३०)

देखो निरंजन की छबिताई।।टेर।।
ज्यों ज्यों प्रीति लगी निशिवासर, त्योंहि भई है जोत सवाई।।
जोग विरोध विमोह को नातो, याकों छेद रही निजपाई।।
अविगत परस भया जे ऐसा, लागें नहीं शुभाशुभ काई।।
जैमलदास चरण चित लागा, या विध मैं सतगुरहीते पाई।।

(३१)

मेरो नेह लाग्यो निर्मल धुनि सों।।टेर।।
तेज प्रकाश भयो या तन में, रीझ रह्यो मन ही मन सों।।
अन्तर जोति झिगामिग जागें, चित लग्यो उनही उन सों।।
दिल मांहि दीया निज दर्शन, क्या कहौं किनही किनसों।।
जैमलदास परस पिउ प्यारा, आत्म भिन्न सदा तन सों।।४।।

(३२)

क्या परदेसीडा री प्रीति जावतो बार न लावै।।टेर।।
आत न देख्यो जात न जान्यो, क्या कहियाँ वन आवै।।
काया बिनसे जीव परदेसी, झूठौ नेह लगावै।।
ऐसे बास फूलन ते विछुरे, माँहो माँहि समावै।।
जैसे संग सराय को, दिन ऊगा उठि जावै।।
जैमलदास अगम रस घट में, जो खोजै सो पावै।।५।।

(३३)

-राग कान्हड़ा-

अर्ध नाम उद्धार करेगो नहिं तो फिर फिर जनम धरेगो।।टेर।।
वेद पुरान सकल को नायक, इनही ते सब काज सरेगो।।
है निज नाम सकल भय भंजन, जे यो सहजां ध्यान धरेगो।।
गहिविश्वास भजन मन लावै, सोइ संतजन तुरत तरेगो।।
अंतर सोझि करे उजवाला, कबहू नां फिर देह धरेगो।।
आवागमन भरम दुख संसो, इनही तें सब सहज टरेगो।।
जैमलदास ऐसी बिध भजियां, भवसागर में नांहि परेगो।।६।।

(३४)

मेरे हिरदे में राम वस्योरी, पांच पचीसूँ तीस नस्योरी।।टेर।।
सुषमण नालि अमी रस भरना, चंद सूर ले भेला करना।।
धरणी बंध ऐसी विध लावै, सहजाँ पवन अगम कूँ आवें।।
अनहद चक्र अजपा बोलै, तासु विचार और नहिं डोलै।।
जैमलदास करो निज सेवा, निर्मल जोति विराजे देवा।।४।।

(३५)

रामसुमिर जन लाहा लेह रे, दुर्मति मेट चरण चित देह रे।।टेर।।
केवल रामके नाम उपासै, नाम उपास निरंतर ध्यावै।
निशिदिन रसना रटत अखंडित, रसना(स)रहित अखंड लिवलावै।।
अरध नाम प्रहलाद उचार्‍यो, नाम विचार तुरत भव टार्‍यो।
तन मन सुरति साहिब सों लागी, असुर बैरी पचि पचि हार्‍यो।।
विष अग्नि गिरवर तें गेर्‍यो, जल में छोरि कुवां में डार्‍यो।
जैमलदास ऐसा हरि हाजर, अति गति अपनो संत उबार्‍यो।।३।।

(३६)

चेतन राम शरण में तेरी, अबकी बेर अर्ज सुन मेरी।।टेर।।
जो रीझौ तो भक्ति मोहे दीजै, अपनो जानि कृपा हरि कीजै।।
आदि अंत मध सकल पसारा, सोई आतम राम हमारा।।
अचरज देखि अचंभो मांही, तेरे जन को संसो नांही।।
जिकै वात तनही में पाया, जैमलदास शरण तेरी आया।।४।।

(३७)

मनरे जो तूँ राम पिछानै, नैड़ा है जो निहचै आनै।।टेर।।
पांचतत ले किया पसारा, जल थल जीव सकल संसारा।।
तीन भवन के बाहिर मांही, हरि विन काज सरै को नांही।।
पालण पोषण सकल संघारण, दीन दया करि दुस्तर तारण।।
जैमलदास सांचें मन भजियें, राम विमुष विषया रस तजियै।।४।।

(३८)

अजपा जाप लगावै हेत, नीर खीर न्यारा करि देत।।टेर।।
विष छांड़ै अमृत कुं पीवै, समझि पिछानै सुमिरन सांच।
अन्तर एक राम सुख राखै, और सकल सुख मानै कांच।।
प्रेम प्रीति निज नाम न छांड़ै, भजै सकल ही व्यापक नूर।
जैमलदास कहै हरि नैडा, दूर कहै ताही सों दूर।।२।।

(३९)

राम नाम धन पायो प्यारा, जनम जनम के मुचे विकारा।।टेर।।
गुरु गोविन्द हरि भक्ति वताये, चरणे आय बहुत सुख पाये।।
साधु संगति मिल हरिगुण गाये, सेवा सुमिरन ध्यान बताये।।
साधुजन की सेवा करियै, भवसागर ऐसै उतरियै।।
जैमलदास प्रभु किरपा कीजै, अपने जनको बहु सुख दीजै।।४।।

(४०)

राम खजानों खूटै नांही, आदि अंत केते पचि जांही।।टेर।।
राम खजाने जे रंग लागा, जामन मरण दोउ दुख भागा।।
सायर राम खजाना जैसे, अंजली नीर घटै वह कैसे।।
काया माँझि खजाना पावै, रोम रोम में राम रमावै।।
जैमलदास भक्ति रस भावै, खानाजाद गुलाम कहावै।।

(४१)

।।राग विहंग।।

विदेशी जीव यो जग झूठो जोय,
दिना चारि का लिया वसेरा, निहचै चलना तोय।।टेर।।
सुमिर सनेही ज्यों सुख होई, फिर फिर मरण न होय।।
तन धन तेरा पीछे रहिगा, जांहि अकेलो रोय।।
पानी मांही पतासा जैसे, यों तन छीनो जाय।
जैमलदास भजो हरि निश्चय, बेगा बार न लाय।।४।।

Shot on OnePlus

(४२)

राम भजन में मन लावै, संतो अनहद तार बजावै।।टेर।।
आतम मांही आप विचारै, शब्द सुनै सुख रासी।
निरख निरख हिरदे में हरखे, आय मिलै अविनासी।।
साँचा ज्ञान ध्यान धरि हिरदे, गगन मंडल मठ छावै।
निर्मल नूर नैण रह लागा, विन रसनां गुण गावै।।
अगम निगम गति जाय न जानी, परखणहार न कोई।
जैमलदास अंतर निज(जिन) खोज्या, देखे अचरज सोई।।३।।

(४३)

।।राग विहागड़ो।।
बड़े सनेही राम पियारे।

पूरण ब्रह्म सकल अघमोचन, भव तारण निज नाम।।टेर।।
जो भूला भव सिंध माही, ते कबु निकसै नांहि।
सतगुर चरण शरण जे लागा पार किया गहिं बाहिं।।
और उपाय भरम सब छांड़ो, राखो राम उपास।
जैमलदास भजन भव तारण, पूरण परम निबास।।३।।

(४४)

संतो जोति झिगामिग जागी, ताते दिल की दुर्मति भागी।।टेर।।
उनमनि ध्यान सुरति सो संधै, सहजां दर्शन पावै।
जनम जनमका मिटत विकारा, बहुरि न भवजल न्हावै।।
विमल जोति सदा संत देखै, सब सांसा मिट जाहीं।
परम तत परकासै तन में, ज्यों दीपक घर माहीं।।
पांच पचीसूँ झूठी माया, तीनूँ ताप जु मेटै।
जैमलदास सोई संत साचा, तन मांहि तत भेटै।।३।।

(४५)

।। राग गूंड़ विलावल ।।

जानेगा जग मांही, अलख लखै घर मांही हो।।टेर।।
सुपन मनोरथ आवै जाय, जागि परें निहचै को नांहि।।
सकल सनेही मिथ्या मूल, सुख दुख शोक रु सांसो सूल।
जैमलदास भजौ भगवंता, शरण गहो जाकौ आदि न अंता।।२।।

(४६)

।। राग पंजाब ।।

साँई मेरा सूझि रह्या सुन मांहि।।टेर।।
है आड़ा गढ़ तेहरा बे, जहाँ ब्रह्म का वास।
निर्विकल्प निरवाण है बे, परमजोति परकास।।
घट में गेबी चंदना बे, सांसा गया विलाय।
निरंजन न्यारा निरखिया बे, सुख में रह्या समाय।।
विन बादल बीजल खिंवै बे, विन अंबर जँह गाज।
विन तरवर जँह फूलिया बे, अलख पुरस का राज।।
हद कूँ मारि हटाय के बे, बेहद पाया हीर।
जैमलदास ऐसे कहै बे, कोई पूर्बलो सीर।।४।।

(४७)

।। राग काफी ।।

रमैया राजा अनंत भवन उर थारै।।टेर।।
व्योम में तुम व्यापि रहे हो, एक निरंतर सारै।
नाम रूप नाना विधि भासत, तुम्ह बिन नांहि लगा रै।।
तुम ही बीज वृच्छ भये तुमही, तुम ही मूल तुम डारै।।
तुम ही रूप अरूपी तुम ही, यों शास्त्र निगम पुकारै।।
जैमलदास एको निज आतम, यह निहचै मन म्हारै।।५।।

इति श्री पूज्य चरण स्वामी जी महाराज
श्री १०८ श्री जैमलदास जी महाराज के अनुभव पद
समाप्त

राम महाराज

गूदड़ रुप भगवन्त नमो, दिया नाम तत सार ।
धार्‌या जैमलदासजी, तार्‌या जीव अपार ।।

हरिरामदास हरिदेव नित, मोती रघु परणाम ।
चेतन राम प्रताप धिन, सेवत चौकसराम ।।
त्यागी रामत्राण पुनि, हियमें भगवतदास ।
क्षमाराम की वीनती, राखो चरणाँ पास ।।

राम तो पालक देह का, गुरु पाले निज ज्ञान ।
सुख पावेलो जीव तब, दास होय तज मान ।।

राम महाराज

रामनाम परताप धिन, जैमल शाखा विस्तरी ।
पंच ग्राई परसिध, जीव तारण महाराजा ।
आंन कुपंथ मिटाई, पंथ भगवद सिध काजा ।।
आरण भरम मिटाय, करम की सींव मिटाई ।
बिसनोई सिख किये, तासु मुख राम रटाई ।।
समत सत्रसै भल समो, आधि व्याधि जीवां हरी ।
राम नाम परताप धिन, जैमल शाखा विस्तरी ।।१।।
जैमलदास परताप पद, दास भये हरिराम धिन ।
वरस सई को सुदिन, मास आषाढ़ उज्यागर ।
वद तिथि तेरस उदै, ज्ञान गुरुदेव कृपाकर ।।
आदि भक्ति को अंश, तारण जीवां हित आये ।
गुरु पद मिल पद परस, ब्रह्म परचै तत्त पाये ।।
निर विकार निरभै भया, जीव सीव मिल नांहि भिन ।
जैमलदास परताप पद, दास भये हरिराम धिन ।।२।।

(श्री द्यालबाल भक्तमाल)

पं.श्रीराधे जोशी

!! श्री राम !!

रामस्नेही सम्प्रदाय सींथल - खेड़ापा का प्रकाशित संत साहित्य

(१) श्री हरिरामदासजी महाराज की अनुभव वाणी
(२) श्री हरिदेवदासजी महाराज की अनुभव वाणी
(३) श्री रामदासजी महाराज की अनुभव वाणी
(४) श्री दयालुदासजी महाराज की अनुभव वाणी सम्पूर्ण
(५) श्री परसरामजी महाराज की अनुभव वाणी
(६) श्री सेवगरामजी महाराज की अनुभव वाणी
(७) श्री रामस्नेह धर्मप्रकाश (नवीन संस्करण में)
(८) श्री रामस्नेह मत दिग्दर्शन (नवीन संस्करण में)
(९) श्री आचार्य चरितामृत (नवीन संस्करण में)
(१०) श्री दयालु दिव्य चरितम् (नवीन संस्करण में)
(११) श्री पाठ पुस्तक एवं पाठ रत्न (नवीन संस्करण में)
(१२) अन्यान्य संत महात्माओं की वाणी

-: प्राप्ति स्थान :-

श्री रामधाम, सींथल
जिला-बीकानेर (राज.)

श्री रामधाम, खेड़ापा
जिला-जोधपुर (राज.)

बड़ारामद्वारा, सूरसागर
जिला-जोधपुर (राज.)

बड़ारामद्वारा पुरोहितजी का बास
रतलाम (मध्यप्रदेश)

श्री आनन्द आश्रम, रानी बाजार, बीकानेर (राज.)
मो. 094144-26477, 094136-58602

Shot on OnePlus

श्री वैष्णव सम्प्रदाय के मेहन्त

श्री श्री 1008 जैमलदास जी महाराज

स्थान दलचासर, जिला बीकानेर